

मध्यस्थ दर्शन(जीवन विद्या) - एक सिंहावलोकन

मानव जाती को प्रस्तुत एक विकल्पात्मक प्रस्ताव (मध्यस्थ दर्शन - सह अस्तित्ववाद)

अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन

(श्री ए नागराज, अमरकंटक , मध्य प्रदेश , भारत - के द्वारा प्रतिपादित)

प्रस्तावना :

सुदूर विगत से सभी मानव सुख और समाधान चाहते आए हैं.लेकिन सुख या समाधान अब तक स्थापित नहीं हुआ . इसका कारण है की मानव “जीव-चेतना “ में जीता आया. जीवों(प्राणिमात्र) के तुलना में अच्छे जीने के क्रम में मानव ने आहार-आवास-आभूषण एवं दूरश्रवण-दूरगमन-दूरदर्शन के क्षेत्र में काफी प्रगती प्राप्त की.इस प्रगति की दिशा के विपरीत,अपराध को वैध माना गया और सभी मानव (विद्वान , विज्ञानी और अन्य सभी) इस पाप के फंदे में फंसे.

इसके प्रमाण भोगोन्माद,लोभोन्माद व कामोन्माद की मानसिकता के रूप में, प्रचलित शिक्षा व्यवस्था और समाज में दिखते हैं. इस भोगवादी मानसिकता को तृप्त करने के लिए “सुविधा संग्रह” और “युद्ध-संघर्ष” को अपनाया गया , जिससे यह धरती अब बीमार हो गयी है.सभी मानव इस भोग में अभी ऐसे लिप्त हो गए हैं की धरती पर मानव परंपरा के अस्तित्व पर ही एक प्रश्नचिन्ह लगा है.

यहाँ मध्यस्थ दर्शन-सहअस्तित्ववाद एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है जिससे इस अपराधी मानसिकता ,अज्ञान एवं जातिवादी मानसिकता से मुक्ति की सम्भावना दिखती है.

आपको सूचित किया जाता है की :

- **“सह-अस्तित्व” अब अध्ययनगम्य हो चुका है.** पुरे अस्तित्व को समझा गया है , अनुभव किया है और इसको , “भौतिक-रासायनिक (जड़) एवं चैतन्यरूपी(सजीव) प्रकृति ” का “व्यापक सत्ता” में(जिसे हम “खाली जगह” के नाम से पहचानते हैं, जो सभी जगह व्याप्त है- में) संपृक्त स्थिति में होना, पाया गया है. “व्यापक” अपने आप में मूल उर्जा , पारगामी एवं पारदर्शी है. इस प्रकार से “यह” एक वास्तविकता है ,यह “क्रिया” नहीं, लेकिन इसका “अस्तित्व” है,यही “सत्य” है और इसीलिए यह “सत्ता” है.
- **मानव को जड़ और चैतन्य के संयुक्त साकार स्वरूप में समझा गया है.** चैतन्य इकाई को १० क्रियाओं (५ “बल” व ५ “शक्ति”) के समुच्चय के रूप में समझा है ; जिसको “जीवन” नाम दिया.चैतन्य के स्वरूप को समझा गया है.

- अस्तित्व में मानव प्रयोजन को समझा है और मानव का “होना” और “रहना” स्पष्ट हो चुका है.मानवीय आचरण , मानवी मूल्य , मानव धर्म* और जाती को समझा गया है.(*धर्म- जिसका जिससे विलागीकरण संभव न हो)

प्रस्ताव :

मानव के सिवा , इस धरती पर शेष तीन प्राकृतिक अवस्थाएँ : “पदार्थ” अवस्था(मिट्टी,पत्थर इत्यादी) , “प्राण”-अवस्था(पेड़-पौधे इत्यादि) और “जीव” अवस्था (पशु-पक्षी इत्यादि) एक दुसरे के साथ पूरक हैं.वे सभी स्वयं में व्यवस्था और बड़ी व्यवस्था में भागीदारी करते हैं .केवल मानव ही है जो स्वयं में व्यवस्थित नहीं है और शेष तीनों अवस्थाओं का शोषण करता है.इसका मूल कारण है नासमझी या अज्ञान ,उसके फलस्वरूप वह “जीव” चेतना में जीता है ,जिसके जीने के मुख्य विषय हैं “आहार , निद्रा , भय और मैथुन “ उनको वह ५ इन्द्रियों से भोग द्वारा प्राप्त करता है. वर्तमान में सभी प्रचलित वैयक्तिक एवं सामाजिक प्रयास इसी दिशा में हैं.

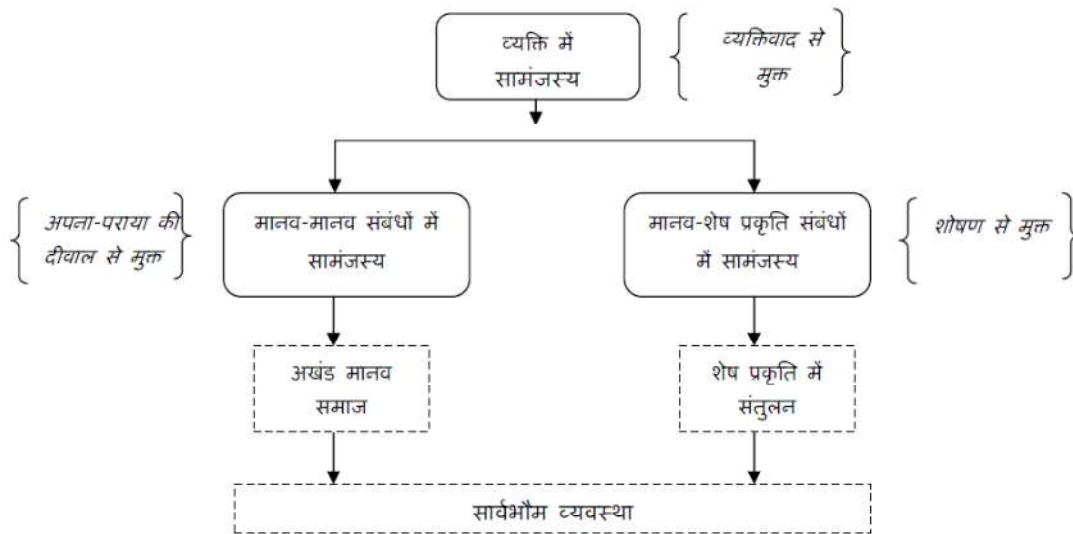
अस्तित्व और वास्तविकता के प्रति हमारी गलत मान्यताएँ और अपूर्ण समझ की वजह से हम मानते हैं की अस्तित्व में , प्रकृति में, संघर्ष और अव्यवस्था है. इसका कारण है हमारा, द्रष्टा का, स्वयं में अंतर्विरोध का होना ,जिससे यह लगता है के अस्तित्व में संघर्ष है, जब के ऐसा नहीं है. इसका और हमारे बाकी सब समस्याओं का मूल कारण है - हमारा “अविकसित-चेतना “ या “जीव-चेतना” या “भ्रम” में जीना ,जिस स्थिति में हम अपने चैतन्य इकाई की क्षमता का अधुरा ही उपयोग करते हैं. अध्ययन विधि से प्राप्त अस्तित्व के अनुभव एवं प्रमाण से हर मानव समझ को प्राप्त कर समाधानित होता है और “विकसित-चेतना” में जीकर सुखी होता है. इस तरह वह मानवीय लक्ष्य जो :

- हर व्यक्ति में बौद्धिक समाधान (से सुख)
- हर परिवार में बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि (से सुख और शांति)
- पुरे समाज में अभय और सामंजस्य(से सुख , शांति और संतोष)
- पुरे प्रकृति में व्यवस्था और संतुलन (से सुख ,शांति, संतोष और आनंद)

इस धरतीपर प्रस्थापित हो सकता है, जिससे मानव जाती अपराध मुक्त , भ्रम मुक्त होगा.

इस समझ को शिक्षा में लाने के प्रयासोंकी पहल भारत में हुई है. आजकी सभ्यता , संस्कृति , विधि एवं व्यवस्था तो उपरोक्त आपराधिक मानसिकता और पाप को बढ़ावा दे रही है.अगर यह सच है ,तो हमारे शांति और सामंजस्य के सभी प्रयास हमको उसी समस्याओं की दिशा में ही ले जाते हैं.

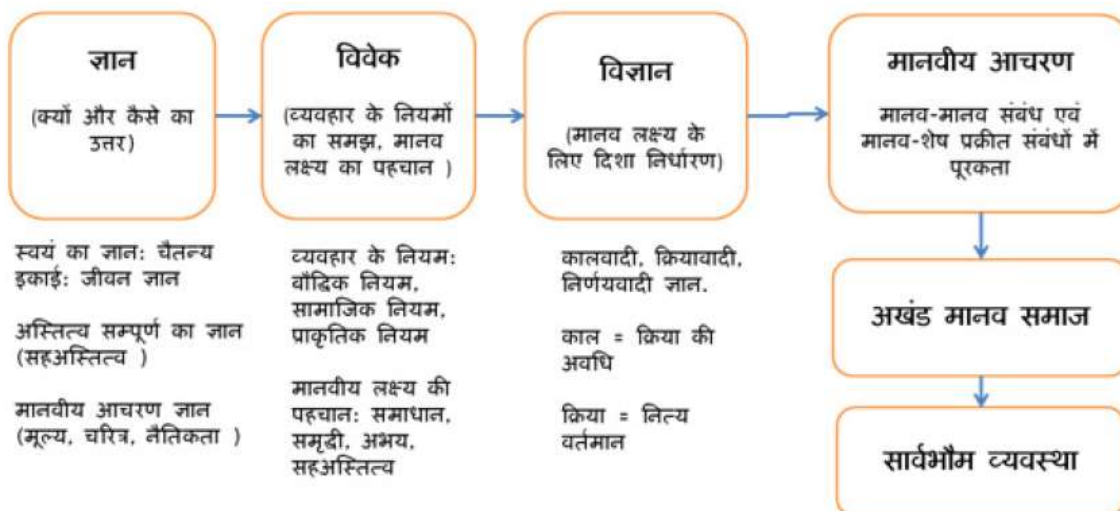
इसीके विकल्प के रूप में , मानवीय संस्कृति , मानवीय सभ्यता , मानवीय विधि और मानवीय व्यवस्था प्रस्तावित है. वर्तमान शिक्षा का विकल्प , वर्तमान राष्ट्र-राज्य संविधान का विकल्प और मानवीय व्यवस्था का विकल्प प्रस्तुत किया है जिसमे मानवीय शिक्षा ,आचरण , विधि व व्यवस्था में एकसूत्रता है.



वर्तमान

में मानव-मानव संबंधों में संघर्ष एवं मानव - शेष प्रकृति सम्बन्ध में संघर्ष यह जीव-चेतनावश भ्रमित विचार एवं मानसिकता का फलन है.इसका उन्मूलन “चेतना विकास” द्वारा संभव है, जिसके लिए निम्नलिखित की आवश्यकता है :

- सहस्तित्वरूपी अस्तित्व की समझ: “अस्तित्व दर्शन ज्ञान” के रूप में
- मानव में चैतन्य पक्ष की समाज : “जीवन ज्ञान” के रूप में (जीवन = चैतन्य इकाई का नाम, “स्वयं” या “मैं”)
- मानवीय प्रयोजन, मानवीय आचरण की समझ (मानव-मानव सम्बन्ध और मानव प्रकृति सम्बन्ध) : “मानवियतापूर्ण आचरण ज्ञान” या “निहित मानवीय स्वभाव” के रूप में.



ऐसे “ज्ञान” के फलन में मानव लक्ष्य “विवेक” के रूप में स्पष्ट होता है और इस लक्ष्य के लिए दिशा निर्धारित करने के रूप में विवेक सम्मत “विज्ञान” स्पष्ट होता है.इस प्रकार हर मानव “विकसित चेतना” में

जीते हुए समझदारी-समाधान संपन्न होता है और स्वयं में सुख-सामंजस्य के साथ होता है और दूसरे मानवोंके और प्रकृतिके साथ सामंजस्य-पूरकता पूर्ण सम्बन्ध निर्वाह करके, दूसरोंके लिए स्त्रोत बनता है.ऐसी समझ या ज्ञान को एक मानव से दूसरे मानव को प्रसारित करने की विधि को पाया गया है , जांचा गया है और प्रमाणीत किया है.

यह समझ, जो अस्तित्व के सीधे एवं प्रत्यक्ष अनुभव का फलन है , जो “अस्तित्व मुलक मानव केन्द्रित चिंतन “ विधि से प्राप्त हुवा, उसमें , मानव को “ज्ञान” अवस्था के रूप में पहचाना.जबकि प्रचलित भौतिकवाद जो “अस्थिरता,अनिश्चयता मूलक भौतिक-रासायनिक वस्तु केन्द्रित विचार” है , उसमे मानव का अध्ययन है ही नहीं और ईश्वरवादी-आदर्शवादी चिंतन जो की “रहस्य मूलक ईश्वर केन्द्रित” है, उसमे भी मानव का अध्ययन अधूरा रहा (ईश्वरवाद-आदर्शवाद= अध्यात्मवाद,पंथवाद,अधि भौतिकवाद). उपरोक्त दोनों प्रवाहोने मानव को “जीव”(प्राणी) कहा. फलस्वरूप मानव ने अब तक अपने मूल स्वभाव और प्रयोजन को नहीं जाना.

आजकी समस्याओं का मूल मानव है.शेष अस्तित्व पहलेसेही “सह-अस्तित्व” में वर्तमान है. अतएव आजकी पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएं ,मानवी संबंधो में समस्याएं,मानव की स्वयं में जो भी समस्याएं या अंतर्विरोध हैं ,जिसको दुसरे शब्दों में हम “दुःख” कहते हैं ,उसका कारण मानव है. अंतर्विरोध बाहर नहीं , मानव के भीतर है, जिसका कारण नासमझी और वास्तविकता का भ्रम है.इसीलिए हम को मानव पर काम करना पड़ेगा.

यह “चेतना विकास मूल्य शिक्षा” के द्वारा संभव है .

मध्यस्थ दर्शन :सह अस्तित्ववाद (जीवन विद्या) आधारित ज्ञान का प्रस्ताव मानव जाती एवं अस्तित्व सम्बन्धी रहस्योंसे मुक्ति दिलाता है. फलस्वरूप एक न्यायपूर्ण मानवीय व्यवस्था और मानवीय परंपरा की सम्भावना स्पष्ट दिखाई है ,जो मानव का लक्ष्य को पूर्ण करेगा.

निम्नलिखित तालिका में प्रचलित शिक्षा एवं प्रस्तावित विकल्प की तुलना है :

प्रचलित शिक्षा का परिणाम	मध्यस्थ दर्शन का प्रस्ताव
लाभोन्माद	समृद्धि- जिसका आधार आवश्यकता का निश्चित होना और न्यायपूर्ण संपत्ति है.
भोगोन्माद	स्वस्थ-शरीर की आवश्यकता की पूर्ति
कामोन्माद	स्वपुरुष / स्वनारी -विवाह सम्बन्ध से
प्रचलित शिक्षा - अवधारणा	मध्यस्थ दर्शन का प्रस्ताव
कामोन्मादी मनोविज्ञान	मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान
लाभोन्मादी अर्थशास्त्र	आवर्तनशील अर्थशास्त्र
भोगोन्मादी समाजशास्त्र	व्यवहारवादी समाजशास्त्र
प्रचलित अवधारणा-आधारभूत	मध्यस्थ दर्शन द्वारा प्रस्तावित “मानसिकता” (अस्तित्व ज्ञान पर

“मानसिकता”	आधारित)
द्वंद्वात्मक भौतिकवाद	समाधानात्मक भौतिकवाद
संघर्षात्मक जनवाद	व्यवहारात्मक जनवाद
रहस्यात्मक आध्यात्मवाद	अनुभवात्मक आध्यात्मवाद
प्रचलित “मानसिकता” का आधार	विकल्प- “मानसिकता” का आधार
अस्तित्व अस्थिर , अनिश्चित , वास्तविकता के आंशिक सूचना पर आधारित	सह अस्तित्वरूपी अस्तित्व के अनुभव पर आधारित, निहित व्यवस्था व निश्चित प्रयोजन
मानव को शरीर मानने की गलती से सुख = इन्द्रिय सुख	मानव के “चैतन्य इकाई” या “मैं” का ज्ञान (जीवन ज्ञान)
मानव को सामाजिक प्राणी माननेकी गलती	मानवीय आचरण ज्ञान = मूल्य , चरित्र , नैतिकता
मानव प्रयोजन से वियोजित विज्ञान	मानव लक्ष्य के अर्थ में विवेक सम्मत विज्ञान
बहुसंख्य वैज्ञानिक एवं दार्शनिक ग्रन्थ	४ दर्शन -मानव व्यवहार,मानव कर्म,मानव अनुभव , मानव अभ्यास

यह वैकल्पिक अवधारणाओं का आधार अस्तित्व ज्ञान है ,जो उपरोक्त बने तालिका में के विकल्प-मानसिकता को जन्म देता है. याने, सही की समझ या ज्ञान होने से यह मानसिकता अपने आप बनती है.इस आधार पर जीने के फलस्वरूप स्वयं में और समाज में व्यवस्था और संगीतमयता होगी.

हर एक मानव को, जो स्वयं के लिए , अपने परिवार के लिए , बच्चों के लिए और मानवीय समाज के लिए , जो सही समझता है , उस आधार पर , उपरोक्त प्रस्ताव का चयन करने का अधिकार है.

जब तक व्यक्तिवादी, जातिवादी एवं भोगवादी मानसिकता रहेगी तब तक संघर्ष और युद्ध रहेगा और विश्वशांति की सम्भावना नहीं है. अगर मानव को इस धरती पर परंपरा बनाने है , तो आवश्यक है , की वह अपराधी मानसिकता एवं अज्ञान से मुक्त हो , ताकि धरती अपने संतुलन को स्वयं में संभल पायें. शिक्षा द्वारा चेतना विकास यही एक मार्ग निकलता है. अब तक हमारी प्रगति के परिणाम आहार-आवास-आभूषण और दूरश्रवण,दूरदर्शन,दूरगमन तक सिमित रहे. हमें अभी संबंधो में न्याय, व्यवस्था,समाधान को मानव धर्म के रूप में पाना है और सत्य को समझना है.

विकल्प को अपनाना होगा. यह अनुसन्धान एवं अस्तित्व में प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा प्राप्त पूरी समझ १२ किताबोमे लिखी गयी है. यह विकल्प का प्रस्ताव अस्तित्व के प्राकृतिक क्रम में एक व्यक्ति द्वारा मानव जाती के सम्मुख प्रस्तुत हुवा है. मैंने यह प्रस्ताव श्री ए नागराज जी से पाया है.मैं यह प्रस्ताव समझने के क्रम में हूँ ,जीना अभी शेष है. मैंने इसका अध्ययन किया है और मुझे ये स्वीकृत है.प्रस्तुत लेख का

विषयवस्तु मुझे उनके(श्री ए नागराज)द्वारा मिली जिसको मैंने अपने शब्दों में लिखा. इसकी जिम्मेदारी मेरी है.

-श्रीराम नरसिम्हन , अमरकंटक ०१-जनवरी २०१२

#जीवन विद्या - मध्यस्थ दर्शन के बारे में सूचना ग्रहण करनेके एक कार्यक्रम का नाम है. चैतन्य इकाई को “जीवन” नाम दिया. विद्या - “विद” धातु से आया -जिसका अर्थ “ज्ञान” है. “जीवन” ज्ञान का वाहक है.

अधिक जानकारी

जीवन विद्या शिविर: www.jeevanvidya.info |

मध्यस्थ दर्शन: www.madhyasth-darshan.info

लेख जिम्मेदारी – श्रीराम नरसिम्हन (in English) | विद्यार्थी | जून २०१२ | zshriram@gmail.com

हिंदी अनुवाद: हेमंत मोहरीर, नागपुर

मूल स्रोत: मध्यस्थ दर्शन (सह अस्तित्ववाद) - प्रणेता एवं लेखक: ए नागराज